बी0ए0एल–एल0बी0 द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

विषयः भारतीय इतिहास–II

कोड–BL-4004

Topic: कट्टरतावाद (Fundamentalism)

कट्टरतावाद **(Fundamentalism)**– कट्टरता से तात्पर्य है कि किसी के प्रति या किसी में अंधविश्वास होना। कट्टरवाद का रूप धर्म में देखने को मिलता है। धर्म में कट्टर होना बड़ा ही खतरनाक होता है, एक कट्टरवादी व्यक्ति को अपने धर्म का प्रत्येक क्रियाकलाप सर्वोत्तम दिखाई देता है और वह दूसरे धर्म से या दूसरे धर्म को मानने वाले को घृणा की दृष्टि से देखता है।

धर्म की कट्टरवादिता समाज व राष्ट्र के लिए हानिकारक होती है। यहां तक कि कट्टरवादिता स्वयं अपने धर्म के लिए भी खतरनाक होती है। उदाहरण के लिए जब हम चंद्रगुप्त मौर्य के विषय में अध्ययन करते हैं, तो पता चलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य के समय में एक बार लंबे समय तक अकाल पड़ा, तो उसके राज्य की जनता त्राहि–त्राहि करने लगी तो उस समय के ज्योतिषियों से सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने परामर्श किया, तो ज्योतिषियों ने चंद्रगुप्त मौर्य से कहा कि यदि राजा दक्षिण में स्थित श्रवण बेला (कर्नाटक) जाकर वहां की पहाड़ी पर तपस्या करें तो राज्य से अकाल समाप्त हो सकता है अन्यथा नहीं।

ज्योतिषियों की इस वाणी को सुनकर के सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने उस पर अमल करना शुरू कर दिया और सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने ज्योतिष के बताए हुए स्थान पर जाने का निश्चय किया। सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य का जैन धर्म में विश्वास था। अतः चंद्रगुप्त मौर्य कि क्रियाकलाप जैन धर्म के अनुसार थी। चंद्रगुप्त मौर्य ने अपना राजपाट का कार्य अपने पुत्र बिंदुसार को सौंप दिया और स्वयं सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य तपस्या करने के लिए मगध राज्य की राजधानी को छोड़कर दक्षिण भारत सवर्ण बेला (कर्नाटक) की पहाड़ियों में चले गए। चंद्रगुप्त मौर्य के साथ

जैन धर्म के विद्वान जैन मुनि भी चले गए थे। वहां जाकर सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने तपस्या की। वहीं पर चंद्रगुप्त मौर्य की मृत्यु हो गई।

कहा जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य की तपस्या करने के पश्चात मगध राज्य फिर से हरा–भरा हो गया। श्रवण वेला में ही चंद्रगुप्त मौर्य की मृत्यु हो गई। चंद्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात जैन मुनि जो चंद्रगुप्त मौर्य के साथ श्रवण बेला गए थे, वापस आ गए। मगध में उस समय पर बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था। यहां तक कि मगध के जैन मुनियों ने अपने शरीर पर सफेद वस्त्र धारण करने शुरू कर दिए। इस परिवर्तन का उन जैन मुनियों ने कठोरता के साथ विरोध किया और उनका मानना था कि जैन धर्म के प्राचीन नियमों में किसी भी प्रकार का बदलाव स्वीकार नहीं है। इस प्रकार से जैन धर्म उसी समय से दो भागों में विभक्त हो गया। एक भाग के अनुयायी श्वेतांबर कहलाए। ये जैन मुनि श्वेत वस्त्र धारण करने लगे तथा दूसरे दिगंबर कह लाए थे। किसी प्रकार का वस्त्र धारण नहीं करते थे। इनमें जैन धर्म के सिद्धांतों का समावेश कूट–कूट कर भरा हुआ था। इस कट्टरवादिता के कारण जैन धर्म का विघटन हो गया।

इसी प्रकार से हम देखते हैं कि गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रतिपादन किया था, जो सारी दुनिया में बड़ी तेज गति से फैला। यह धर्म भी अपनी कट्टरता के कारण दो भागों में विभक्त हो गया। एक भाग हीनयान कहलाया और दूसरा भाग महायान कहलाया। हीनयान संप्रदाय के लोग महात्मा बुद्ध को महापुरुष मानते थे, जबकि महायान संप्रदाय के लोग महात्मा बुध को देवता मानते थे और इस सम्प्रदाय के लोगों ने बुध की पूजा–अर्चना शुरू कर दी। छठी शताब्दी में इस्लाम धर्म का उदय हुआ और अपनी कट्टरता के कारण इस्लाम धर्म भी दो भागों में विभक्त हो गया। एक भाग के अनुयायी शिया कहलाए और दूसरे भाग के अनुयायी सुन्नी कहलाए। शिया और सुन्नी दोनों ही अपने अपने सिद्धांतों के पक्के होते हैं और एक दूसरे से नफरत करते हैं। इस प्रकार से इस्लाम धर्म को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी और इन संप्रदायों के मध्य द्वन्द चलता ही रहता है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि इस कट्टरता से देश का बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ती है। इस कट्टरता के कारण दो संप्रदायों के बीच झगड़ा चलता रहता है और एक संप्रदाय दूसरे संप्रदाय को हानि पहुंचाने का कार्य करता है। यह झगड़ा

संप्रदाय की कट्टरता के कारण ही होता है, जिससे समाज में नफरत पैदा होती है और यह नफरत समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। राष्ट्र को आगे बढ़ने से रोकती है। कट्टरता इतनी खतरनाक है कि जब यह भावना व्यक्ति में आ जाती है, वह अपने ही धर्म को सर्वोपरि मानने लगता है और दूसरे के धर्म के प्रति केवल नफरत करता है।

इसी प्रकार का उदाहरण हमें 1893 ई0 में सर्वधर्म सम्मेलन अमेरिका के शिकागो शहर में देखने को मिलता है। इस सम्मेलन में भारत की तरफ से हिंदू धर्म का प्रतिनिधि क रूप में स्वामी विवेकानंद गए थे। उस सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने अपनी आंखों से देखा और कानों से सुना था कि उस सर्व धर्म सम्मेलन मं भाग जितने भी सदस्यों ने लिए वे सभी अपने धर्म को सर्वोच्च तथा दूसरों के धर्म को तुच्छ समझते थे और प्रतिनिधि अपने धर्म का व्याख्यान और दूसरों के धर्म की आलोचना कर रहे थे। स्वामी विवेकानंद ने अपने धर्म की सर्वोच्चता के साथ–साथ दूसरे धर्मों को भी समानता के साथ संबोधित किया था। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने कट्टरता का परित्याग करके दूसरों लोगों का भी समर्थन प्राप्त किया था। अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि कट्टरवादिता कभी भो व्यक्ति को सम्मान नहीं दिला सकती। अतः कट्टरवादिता देश व राष्ट्र के लिए बहुत ही हानिकारक है।

For further queries you may reach us via..
E-mail - mahikumud@gmail.com
Mob - **9412547531**
Dr Mahipal
Teaching Assistant
ILS, CCSU Campus, Meerut